विद्यालय भवन की संरचना

विद्यालय भवन एक व्यापक शब्द है, जिसके अन्तर्गत स्थिति, इमारत, खेल के मैदान, फर्नीचर, यन्त्र, पुस्तकालय, छात्रावास और अन्य साज-सज्जा आती है, जब तक विद्यालय की स्थिति का चुनाव उपयुक्त ढंग से नहीं किया जायेगा तब तक विद्यालय की इमारत को उपयुक्त ढंग से नियोजित एवं निर्मित करके भी उनसे पूर्ण लाभ नहीं उठाया जा सकता है क्योंकि विद्यालय की स्थिति का प्रभाव विद्यालय की पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था एवं बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर पड़ता है। विद्यालय के लिए उपयुक्त भूमि, उचित यान-पड़ौस, शुद्ध जल, वायु एवं प्रकाश आदि का होना अनिवार्य है, आज के जटिल युग में विज्ञान एवं मनोविज्ञान की उन्नति के साथ-साथ सीखने व सिखाने की विधियाँ उतनी सरल नहीं हैं। अब विद्यालय में प्रत्येक विषय एवं क्रिया के लिए विशेष प्रकार के उपकरण व साज-सज्जा की आवश्यकता है। उन्हें विद्यालय अपने उद्देश्यों की प्राप्ति एवं कर्तव्यों का पूर्ण निर्वाह तभी

2

कर सकता है, जब समस्त विद्यालय - भवन अर्थात उनकी स्थिति इमारत एवं साज - सज्जा आदि सभी उपयुक्त हों।

विद्यालय का भौतिक वातावरण :- हमारे देश में हजारों विद्यालय सुविधाजनक तथा सौन्दर्यपूर्ण वातावरण में स्थित होने के कारण बजाय ऐसे स्थानों में स्थापित है जहाँ उनका पास - पड़ोस अत्यन्त दूषित एवं अस्वस्थ पाया जाता है। बहुत से विद्यालय भवन ऐसे स्थानों पर बने हुए है जहाँ का वातावरण न तो शोरगुल से मुक्त है, और न ही कूड़े के ढेरों, सीलन व कीचड़ आदि से, इस गन्दगी के कारण वहाँ मक्खी मच्छरों तथा बीमारियों का प्रकोप निरन्तर बना रहता है। देश में लाखों बालक तंग, अँधेरी गलियों में स्थित अस्वच्छ एवं अस्वस्थ विद्यालय भवनों में शिक्षा प्राप्त कर रहे है। बहुत से विद्यालय टूटे - फूटे भवनों में स्थित होने के कारण असुरक्षित है।

3

विद्यालय की स्थापना के लिए ऐसे स्थान कदापि उपयुक्त नहीं है बालकों की सुरक्षा के विचार से विद्यालय नदी, झील, तालाब आदि के निकट भी न हो तो अच्छा है।

विद्यालय केवल वह स्थान नहीं है जहाँ परम्परागत विषयों का शिक्षण परम्परागत ढंग से किया जाता है वरन् यह बालक का घर जैसा होना चाहिए जहाँ वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों को सुविधापूर्वक व्यतीत कर सके तथा अपने भविष्य में सफल व सुखी जीवन के लिए तैयार कर सके।

विद्यालय भवन का मानचित्र

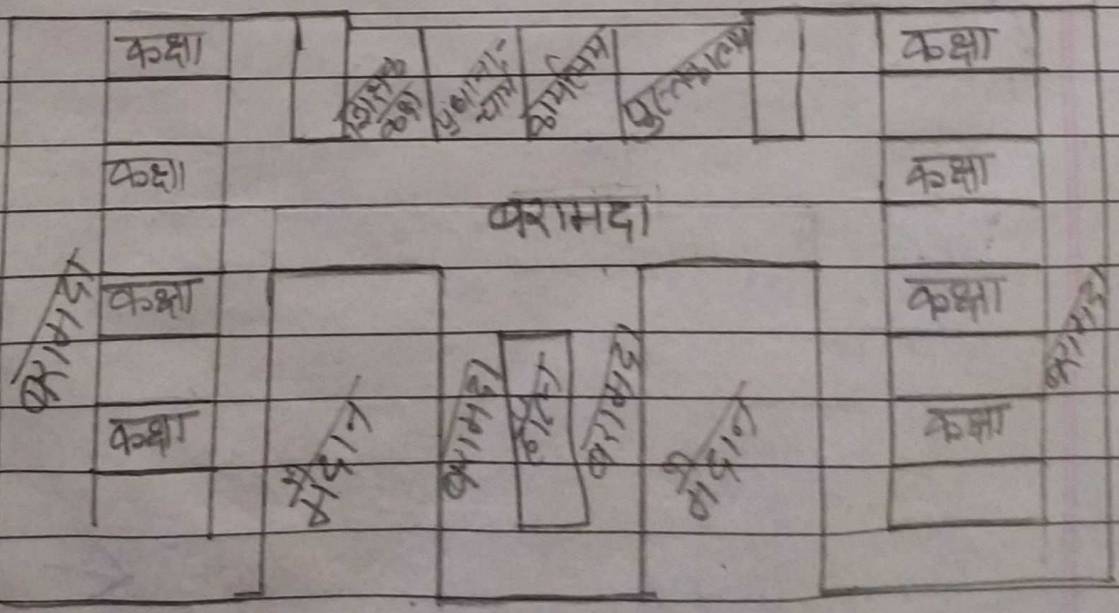

E आकार का भवन

H- आकार का भवन

U- आकार का भवन

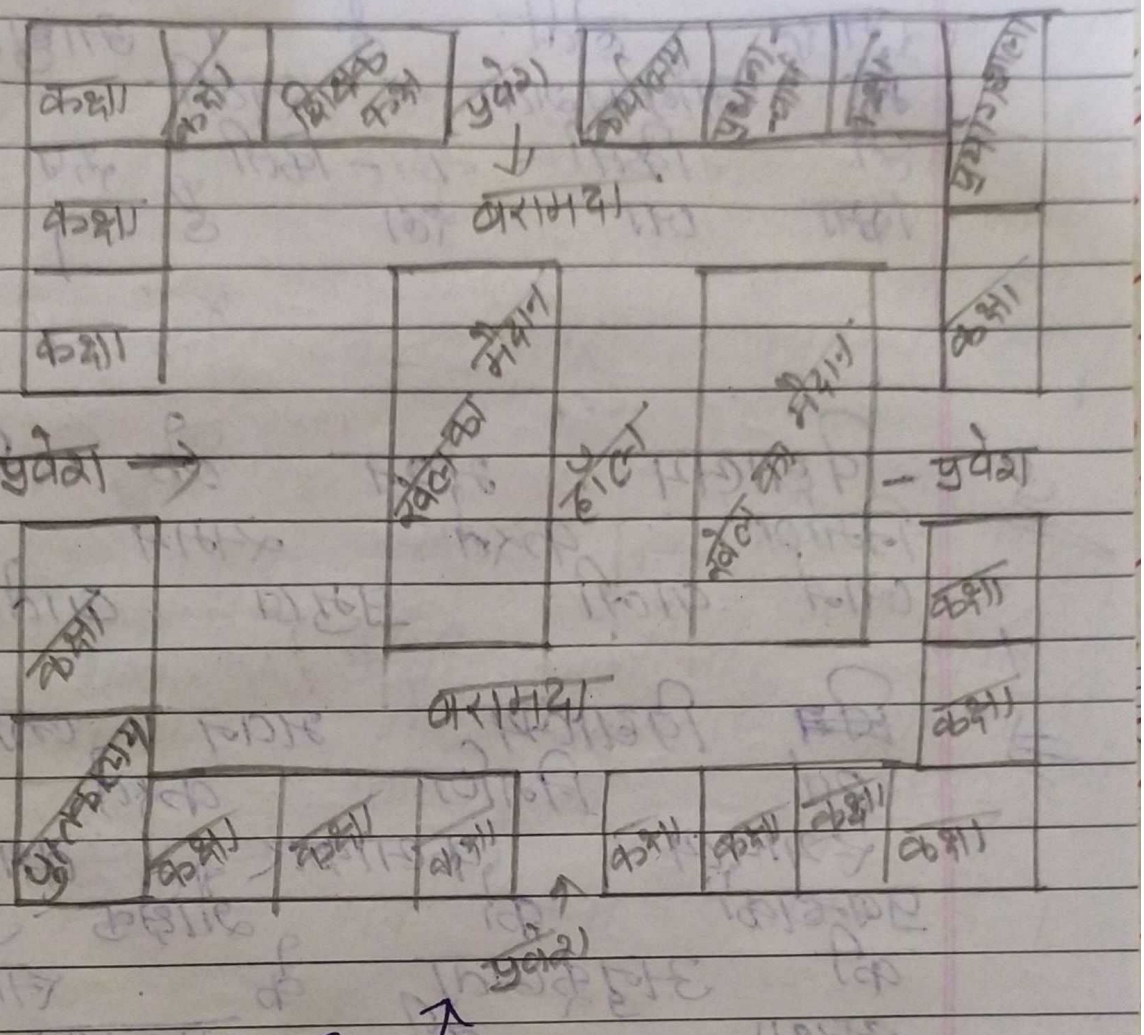

भीतरी प्रांगण वाला भवन

सामान्यतः विद्यालय भवनों के लिए दो प्रकार की - खुली हुई तथा बन्द - योजनाओं या बाल कपरेखाओं का प्रयोग किया जाता है, खुली योजनाओं में E, H, I, T, U आदि इमारतों का अधिक प्रयोग किया जाता है। तथा बन्द (भीतरी प्रांगण वाल भवन) योजनाओं में भी जिसमें भवन के बीच में खाली स्थान

6

रहता है और उसके चारों ओर
दीवार होती है। आधुनिक युग
में अधिकांशतः खुली योजना का
ही किसी-न-किसी रूप में प्रयोग
किया जा रहा है।